संपादकीय

बीमार राज्य

देश के राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति के बाबत नीति आयोग के चौथे सर्वे में जहां दक्षिण भारतीय राज्यों ने बेहतर स्थिति को बनाये रखा है, वहीं उत्तर भारत के राज्य पिछड़ते नजर आते हैं। कुल 24 मानकों के आधार पर तैयार सूचकांकों में केरल पहले की तरह एक नंबर पर रहा, वहीं तमिलनाडु और तेलंगाना दूसरे-तीसरे स्थान पर रहे। उत्तर भारत के बड़े राज्यों में उत्तर प्रदेश इस सूची में सबसे नीचे 19वें स्थान पर रहा है। लेकिन उल्लेखनीय बात यह है कि उत्तर प्रदेश ने मानकों में सुधार की दृष्टि से नंबर एक स्थान पाया है। वहीं राजस्थान, मध्य प्रदेश व बिहार, यू.पी. से ऊपर हैं। दरअसल, ये आंकड़े वर्ष 2019-20 के हैं, जिसे पूरी तरह कोविड काल नहीं कहा जा सकता। राज्यों की स्वास्थ्य सेवाओं का असली मूल्यांकन इस बात पर निर्भर करेगा कि कोरोना काल में ये राज्य अपने नागरिकों की जान बचाने में कितने कामयाब हुए। हालांकि, दक्षिण राज्यों में रोगियों को सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के तहत बेहतर सेवाएं प्रदान की गईं। निस्संदेह, केरल स्वास्थ्य सेवाओं में बेहतर स्थिति में है, लेकिन बीस करोड़ आबादी वाले उत्तर प्रदेश की तुलना 3.3 करोड़ आबादी वाले केरल से नहीं की जा सकती। बड़ी आबादी के चलते पिछड़े राज्यों में प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति जीडीपी और मानव विकास सूचकांक निचले स्तर पर हैं। लेकिन ओडिशा इस मामले में अपवाद है कि दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति से बेहतर प्रशासन व जन भागीदारी से स्थिति में बदलाव लाया जा सकता है। यदि उत्तर भारत के पिछड़े राज्य स्थिति में बदलाव को कटिबद्ध हों तो उन्हें ओडिशा मॉडल का अध्ययन करना चाहिए। कमोबेश देश की राजधानी दिल्ली में भी स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति उत्तर प्रदेश जैसी पिछड़ी होना चिंता की बात है। हालांकि, ये दोनों ही प्रदर्शन सुधार की दृष्टि से अग्रणी क्षेत्रों में शुमार हैं। बहरहाल, कुल मिलाकर देश की स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति संतोषप्रद नहीं कही जा सकती है।दरअसल, नीति आयोग का हालिया सर्वे स्वास्थ्य सेवाओं के ढांचे को गंभीरता से लेने को कहता है। यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि उत्तर भारत के राज्यों में शिशु मृत्यु दर व प्रसूति माताओं की मौत का आंकड़ा आज भी ज्यादा क्यों है? यह भी कि अस्पतालों में उपचार की विशेषज्ञता का अभाव क्यों है। चिंता की बात यह है कि कई राज्यों में स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाले खर्च में कटौती की गई है। जाहिरा तौर पर इसका असर स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता पर पड़ता है।

टकराव खत्म करने का शांतिपूर्ण तरीका

गुरबचन जगत

फिलहाल किसान आंदोलन स्थगित है। तीन कृषि सुधार कानूनों को यूनियनों और किसानों के विरोध की आशंका भांपकर अध्यादेश के जरिए लागू किया गया था। इनको बनाते वक्त न तो कृषकों की राय ली, न संसद में चर्चा हुई और न ही किसी संसदीय समिति से सलाह ली गई। इस एकतरफा कार्रवाई ने अभूतपूर्व आंदोलन को जन्म दिया, जो एक साल से ज्यादा चला। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान इत्यादि से आए लाखों कृषकों ने दिल्ली सीमा पर चले धरनों में भाग लिया। सरकार द्वारा किसानों की ज्यादातर मांगों को मानने से आंदोलन को उल्लेखनीय सफलता मिली। यदि पहले ही सलाह-मशविरा या संसद में बहस होती तो ये नौबत न आती।

अत: एकतरफा कार्यकारी शक्ति प्रयोग और संसद को पूरी तरह दरकिनार करने से यह टकराव पैदा हुआ। विडंबना है कि लोकतांत्रिक ढंग से चुनकर आई सरकार ऐसा व्यवहार करे। संसद व संसदीय बहसें प्रजातंत्र का मूल अवयव होती हैं। अफसोस, आज इस प्रक्रिया को नजरअंदाज़ किया जा रहा है। सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा के अहम विषय जैसे कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीन की घुसपैठ, लॉकडाउन में मजदूर पलायन, कोविड इत्यादि पर भी अन्यों से विमर्श करना गवारा नहीं किया। आजादी पूर्व महात्मा गांधी ने सफलतापूर्वक अहिंसक जन आंदोलन चलाए थे। इसी तरह मार्टिन लूथर किंग की अगुवाई में 1950 के दशक में रंगभेद ग्रस्त अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन हुआ था। क्या वर्तमान सरकार यही चाहती है कि लोगों के पास अपनी मांगों को लेकर बड़ा आंदोलन करना ही एकमात्र रास्ता बचे। इन पर भी ध्यान तब जब चुनाव हारने का डर आसन्न हो?

भारत एक उप-महाद्वीप है जहां विश्व आबादी का छठवां हिस्सा बसता हैङ्कअतएव जिंदगी के अनेकानेक पहलुओं पर मतांतर होना स्वाभाविक है। तथापि इन मतभेदों को आंदोलन में तब्दील होने देना, विशेषकर अनसुलझे टकरावों में, इससे आगे सशस्त्र विद्रोह जन्म लेते हैं, यही हुआ और यह कालांतर में केंद्र व राज्यों में आई विभिन्न सरकारों की विफलता का नतीजा है। केंद्र सरकार ने इन टकरावों में और इजाफा किया ।

आइए, कुछ बड़े टकरावों पर नज़र डालें जो लंबे समय से देश में ज्वलंत हैं। उदाहरणार्थ पिछले कुछ दशकों से छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड और महाराष्ट्र के हिस्सों में व्याप्त माओवादी आंदोलन,

इसमें दोनों पक्षों की सैकड़ों जानें गईं। कारोबार हेतु कॉर्पोरेट जगत को किसी भी तरह 'शांति' चाहिए। साथ ही आर्थिकी हेतु प्राकृतिक स्रोतों की खोज व इस्तेमाल की आतुरता रहती है। दरअसल, समस्या संसाधनों के असमान वितरण में है, यानी इसके नैसर्गिक मालिक स्थानीय लोगों और बाहरी मुनाफाखोरों के बीच। हालिया विश्व असमानता रिपोर्ट के अनुसार देश का 65 फीसदी घरेलू सरमाया 10 प्रतिशत हाथों में सिमटा है। यही समस्या की जड़ हैङ्कचहेते पूंजीपतियों को बढ़ावा और उनकी कंपनियों को स्रोतों एवं लोगों की दोहन की छूट जनजातीय क्षेत्रों में ज्यादा दिखाई देती है। फिर विरोध स्वरूप पैदा संघर्ष को धधकने दिया जाता है क्योंकि इससे सत्तासीनों का स्वार्थ सधता है। जायज समस्याओं पर बातचीत का सतत प्रयास नहीं होता। संवाद की अनुपस्थिति में सरकारें स्थिति से निपटने को विशेष शक्ति और कानून बनाकर व केंद्रीय सशस्त्र बल व अनाड़ी राज्य पुलिस बल तैनाती के उपाय करती हैं। इससे अंतहीन टकराव स्थानीय लोगों के दमन-चक्र में बदलता है। दमन से क्षुब्ध समाज के कुछ वर्ग हिंसक प्रतिक्रिया चुनते हैं। हालांकि ऐसा रास्ता कोई समाधान नहीं है, बल्कि इसकी बड़ी कीमत चुकानी होती है। लगता है लोगों के पास अब शांतिपूर्ण आंदोलन करना और स्थानीय नेतृत्व से लंबा चलाने का एकमात्र विकल्प बचा है। वही राह, जिससे हमें आजादी मिली। एक ऐसा जन-आंदोलन, जिससे सत्ताधीशों को चुनावी हार का डर सताए। यही व्यवहार्य राह बची है।

इसी तरह देश का उत्तर-पूरबी भाग दशकों से अस्थिर है। इस मामले में, केंद्र द्वारा वहां का निज़ाम अधिकांश समय रिमोट कंट्रोल के जरिए चलाने वाली व्यवस्था के परिणाम बेहतर नहीं रहे। दिल्ली में बैठे नौकरशाह वहां की स्थिति से निपटते रहे, वह भी ज्यादातर संयुक्त-सचिव स्तर वाले। आलम यह था, बहुत सालों तक मुख्यमंत्री उक्त संयुक्त-सचिवों नौकरशाहों से ही मिल पाता था, उनसे ऊपर किसी से नहीं। यह रवैया नेताओं व स्थानीय लोगों के लिए अपमानजनक था। इन अधिकांश राज्यों में दशकों से लागू सशस्त्र बल विशेष शक्ति अधिनियम (अफस्पा) नागरिक को तंग करने के अलावा कुछ विशेष नहीं रहा। इस व्यवस्था का होना ही एक असफल सरकार का द्योतक है न कि खास हालातों का, जैसा कि हमें यकीन दिलाने को बताया जाता है। तिस पर प्रशासन भ्रष्ट और अप्रभावी है और राजनेताओं की मिलीभगत है। सीमा जगह-जगह खुली है। विद्रोही लड़ाकों की आवाजाही से छोटे हथियार, गोला-बारूद व नशीले पदार्थों की आमद होती है।

बड़े पैमाने पर व्याप्त भ्रष्टाचार से विशेष विकास फंड और विशेष विभागों का गठन स्थानीय लोगों की समस्याओं को दूर करने में निष्प्रभावी रहे हैं। विभिन्न फंड व विभागों में भर्तियों का बड़ा भाग सरकारी कर्मियों और भूमिगत तत्वों के बीच बंट जाता है। तथ्य तो यह है कि नागालैंड-मणिपुर जैसी जगहों में, फंड का अधिकांश हिस्सा अंदरखाते भूमिगत तत्वों तक पहुंचता रहा है। इसके अलावा ट्रांसपोर्टरों, व्यवसायियों और दुकानदारों से 'टैक्स' अलग से उगाहते हैं। बंद-हड़तालें थोपकर ये लोग सूबे और लोगों को बंधक बनाए हुए हैं। नागालैंड में शांति-स्थापना समझौते के बाद सरकार एक तरह से भूमिगत तत्व चला रहे हैं। यूं तो मध्यस्थ वार्ताकार दो दशकों से परिदृश्य पर हैं, लेकिन दिखाई न देने वाले परिणाम के साथ। हमेशा कहा जाता है कि हल बस अगले मोड़ पर है, लेकिन मोड़ कभी नहीं आता। इसलिए स्वार्थी तत्वों को बीच में डाले बिना सरकार और लोगों के बीच सीधी बातचीत जरूरी है। नागालैंड और मणिपुर में सिविल अधिकार आंदोलनकर्ता इस तरह का संवाद बनाने में मजबूत और समर्थ हैं। हो सकता है इनके न होने पर वे शांतिपूर्ण जन-आंदोलन की राह अपनाएं। सरकार और लोगों के बीच अविश्वास की गहरी खाई है, टकराव का हल निकालने को उसे पाटना होगा। इसकी पहल सरकार करे। एक स्वच्छ-ईमानदार प्रशासन का विकल्प मुफ्त की वस्तुएं-रियायतें नहीं बन सकती, जो जनता को लगाया जाना वाला नया नशा है।

कानून ही नहीं, अवसरों की भी जरूरत

सरस्वती रमेश

लोग कहते हैं कानून के हाथ लंबे होते हैं। मगर देखने में मिलता है कि कई मामलों में ये हाथ सिकुड़ कर रह जाते हैं। विवाह के मामले में भी कुछ ऐसा ही होता है। विश्वास न हो तो आजमगढ़, बलिया, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी जैसे किसी भी कस्बाई नगर में चले जाइये। वहां किसी भी सड़क पर 15-20 मिनट खड़े हो जाइए। सड़क पर आती-जाती माथे पर सिंदूर लगाए किशोरियों को देखिए और गिन लीजिए उनकी संख्या। आपको पता चल जाएगा 18 वर्ष से कम उम्र की कितनी लड़कियां शादीशुदा हैं और लड़कियों की शादी के लिए तय उम्र की जमीनी हकीकत क्या है। सड़कों पर आपको प्राइमरी डेटा मिल जाएगा।

अब जरा सेकंडरी डेटा पर गौर फरमाइये। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2015-16) के अनुसार 56 प्रतिशत लड़कियों की शादी 21 वर्ष से कम उम्र में हो जाती है। गरीब आबादी के बीच यह संख्या 75 प्रतिशत के आसपास है। मतलब लड़कियों की शादी के मामले में अब तक के सारे कानूनों की पकड़ ढीली साबित हुई है। मतलब कानून बने तो कानून का पालन भी सख्ती से होना चाहिए।

लड़कियों की शादी कम उम्र में हो रही है। हमारी सरकार इसके दुष्प्रभावों से चिंतित थी। स्थिति में सुधार के लिए सरकार लगभग डेढ़ साल से हाथ-पैर चला रही थी। और अब एक नया कानून बनने जा रहा है। अब 21 वर्ष से कम उम्र में लड़कियों की शादी कानूनन जुर्म होगा। इसकी जरूरत बताते हुए वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में कहा कि लड़कियों की शादी की उम्र बढ़ाने का मुख्य उद्देश्य मातृ मृत्युदर में कमी, उनकी सेहत की रक्षा करना और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें बढ़ावा देना है। मगर सोचने की जरूरत है कि क्या वाकई यह कानून से जुड़ा 'पुलिसिया मामला' है या इसके तार कहीं और से जुड़े हैं।

जहां तक मातृ मृत्यु दर का प्रश्न है तो यह सच है कि अधिकतर लड़कियां कम उम्र में मां बनकर प्रसव के दौरान होने वाली कांप्लिकेशंस से मर जाती हैं। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि वे सब जागरूकता के अभाव और अशिक्षा के चलते समय से पहले बनी मांएं थीं। इनमें अधिकतर महिलाएं मेडिकल सुविधाओं, बेहतर चिकित्सकों के अभाव, अस्पतालों में होने वाली लापरवाही की भी शिकार होकर अपनी जान से हाथ धो देती हैं।

कच्ची उम्र में मां बनने की इतनी बड़ी संख्या होने की एक और बड़ी वजह यह कि हमारे समाज में कोई भी स्त्री मां बनने से पहले यह नहीं सोचती कि उसका शरीर मां

बनने के योग्य है या नहीं। अधिकतर औरतें खुद से कभी यह सवाल नहीं पूछती कि क्या वे वास्तव में मां बनने के लिए तैयार हैं या नहीं। वह समाज के दबाव, परिवार की इच्छा और परंपरा का निर्वाह करने के लिए मां बनती हैं।

जहां तक जच्चा-बच्चा की सेहत का मसला है तो यह सीधे उनके पारिवारिक बैकग्राउंड और उनकी आर्थिक स्थिति से जुड़ा हुआ है। गरीब परिवार में जन्मे बच्चे कुपोषण व अन्य बीमारियों की चपेट में जल्दी आ जाते हैं। जबकि संपन्न परिवार में जन्मे बच्चे चाहे वह लड़की हो या लड़का, अच्छे खान-पान व पोषण के कारण स्वस्थ रहते हैं। गरीब परिवार की आर्थिक स्थिति को भी सुधारने का प्रयास करना होगा। समय के साथ एक नई समस्या भी उभरी है। यह समस्या है कम उम्र में ही विपरीत सेक्स के प्रति यौन आकर्षण का उभरना।

अब लड़कियों की शादी की उम्र तीन साल बढ़ा देने से तो 'यौन अपराधियों' की संख्या तो निश्चित तौर पर बढ़ेगी। तो क्या हम पुलिसिया अंदाज में उनकी हरकतों को अपराध मानकर सजा देंगे या किशोरवय बच्चों को पहले से जागरूक किया जाएगा। लड़कियों के पीछे रह जाने की और भी कई वजह हैं। जैसे मां-बाप पहले लड़कियों का ब्याह कर अपने सिर का बोझ हल्का करना चाहते हैं।

दरअसल, मूल समस्या सही शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं और रोजगार के अवसरों की कमी रही है। यदि बारहवीं के बाद लड़कियों को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाए तो शायद मां-बाप सहर्ष उसे स्वीकार कर उनकी शादी टाल सकते हैं। और फिर कमाने वाली महिला अपने विवाह से जुड़े फैसले खुद ले सकेगी।

वही पुरानी चाल और नया साल

शमीम शर्मा

पता नहीं नये साल की शुभकामनाएं लोग एडवांस में क्यों देने लग जाते हैं। विश्वास रखें, नये साल के दिन हम कहीं भाग तो नहीं जायेंगे। पिछले सात-आठ दिनों से नववर्ष संदेशों की बाढ़-सी आनी शुरू हो चुकी है। सूरज की नई किरणों, नव सुगन्ध, नव सपनों व संकल्पों की बातें इन संदेशों में खूब ज़ोरों-शोरों से हो रही हैं। पर मेरी तो इतनी-सी कामना है कि नये साल में आप मूंगफली छीलो तो उसमें काजू निकलें।

नया साल आने पर न तो नये-पुराने साल में कोई फर्क होता है और न ही नई सरकार बनने में। नववर्ष प्रारम्भ होते ही बस एक नया कैलेंडर उसी पुरानी दीवार पर लटक जाता है और कई बार तो यह कैलेंडर पुराने वाले की छाती पर ही लटका दिया जाता है। ठीक उसी तरह जैसे किसी पुरानी सरकार को हटाकर नई सरकार हमारी छाती पर मूंग दलती है। नई सरकार गठित होने पर नये नेताओं की फोटो सरकारी कैलेंडर पर चस्पां हो जाती हैं, जिसे देखने में किसी की दिलचस्पी नहीं होती। सभी कर्मचारी सिर्फ छुट्टियों की लिस्ट पर आंखें गड़ाये रहते हैं। हम पूरी गर्मजोशी से कभी घर पर टीवी के सामने या पहाड़ों पर जाकर नववर्ष का अभिनंदन करते हैं। पर नूतन वर्ष का हमारा जोश पांच-सात दिनों में ही उस नयी ब्यावली दुल्हन की तरह फुर्र हो जाता है, जिसके सारे चाव निकल चुके हैं और असलियत सामने आने लगी है। यानी कि भूल गये राग रंग, भूल गये जकड़ी। तीन चीज़ याद रही नून, तेल, लकड़ी।पिछले दो साल तो नाकों चने चबवाने वाले निकले हैं। सबका मन कर रहा है कि इस काल-खण्ड को धक्का दे दिया जाये। कोरोना और अब उसका भाई ओमीक्रोन अपने वीभत्स रूप से हमें ललकार रहा है। पर हम ही नहीं, पूरी दुनिया इस बीत रहे साल के जाने के जश्न में गाने-नाचने में तल्लीन है। पर अंदर ही अंदर सबके दिलों में एक अज्ञात भय मजबूत खम्भे की तरह गड़ा हुआ है कि पता नहीं तीसरी लहर क्या जलवा दिखायेगी। अच्छे दिनों की प्रतीक्षा में बैठे हम लोगों की खिदमत में एक नवीन वर्ष आ रहा है तो सबकी कामना है कि किसी का बाल भी बांका न हो। कोरोना ने जिस तरह पूरी दुनिया की नाक में दम किया है, हम भी अब कोरोना की नाक में दम करके ही दम लें।

नये साल पर नई खुशियां हो!

डा श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट

नया साल निश्चित ही नई खुशियों की सम्भावना लेकर आता है।हालांकि पहले कोरोना और अब उससे भी खतरनाक ओमिक्रान का खतरा नए साल में सिर पर मंडरा रहा है।जिसे सावधानी ही बचाव के तरह हम टाल सकते है।हम सब सोचते है इस साल जो हुआ सो हुआ लेकिन हम सबके लिए आने वाला साल अच्छा ही हो।इसीलिए नये वर्ष का जुनून हर किसी के सिर चढ़कर बोलता है।हर कोई चाहता है कि नये साल में उसके मन की सारी मुरादे पूरी हो जाये और आने वाला साल उप्लब्धयो भरा सिद्ध हो।नये वर्ष को मनाने के बारे में कहा जाता है ,नव वर्ष लगभग 4,000 वर्ष पहले बेबीलीन नामक स्थान से मनाया जाना शुरू हुआ था। प्रत्येक वर्ष एक जनवरी को मनाया जाने वाला यह पर्व ग्रेगोरियन कैलेंडर पर आधारित है। इसकी शुरुआत रोमन कैलेंडर से हुई है।

इस रोमन कैलेंडर का नया वर्ष 1 मार्च से शुरू होता है, लेकिन रोमन के प्रसिद्ध सम्राट जूलियस सीजर ने 46 वर्ष ईसा पूर्व में इस कैलेंडर में परिवर्तन किया था। इसमें उन्होंने जुलाई का महीना और इसके बाद अपने भतीजे के नाम पर अगस्त का महीना जोड़ दिया। तब से नया साल 1 जनवरी को मनाया जाने लगा।हालांकि हिन्दू संवत्सर के अनुसार अभी भी चैत्र मास प्रतिपदा से ही नये वर्ष की शुरुआत मानी जाती है।लेकिन अधिकांश लोग दुनियाभर मे एक जनवरी

को ही नववर्ष के रूप मे मनाते है।हिन्दू धर्म के अनुसार ब्रह्मा जी ने हिन्दू संवत्सर के पहले दिन सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। इसलिए इस दिन से नव वर्ष का आरंभ भी होता है। इस्लामी कैलेंडर के अनुसार मोहर्रम महीने की पहली तारीख को नया साल हिजरी शुरू होता है। जिसका प्रचलन आज भी जारी है।अपने देश में नववर्ष सभी स्थानों पर अलग-अलग तिथियों पर मनाया जाता है। ज्यादातर ये तिथियां मार्च और अप्रैल के महीने में पड़ती हैं। पंजाब में नया साल बैशाखी के रूप में 13 अप्रैल को मनाया जाता है। सिख धर्म को मानने वाले इसे नानकशाही कैलेंडर के अनुसार मार्च में होली के दूसरे दिन मनाते हैं। जैन धर्म के लोग नववर्ष को दिवाली के अगले दिन मनाते हैं। यह भगवान महावीर स्वामी की मोक्ष प्राप्ति के अगले दिन से शुरू होता है। दुनियाभर में नववर्ष अलग अलग ढंग से मनाया जाता है। इसे मनाने की हर देश की अपनी एक अलग परंपरा है जिसके पीछे कुछ प्रतीक भी हैं और खुशिया मनाने के तरीके भी निराले है।

नववर्ष पर पर्यावरण सुरक्षा के लिए कुछ ऐसा करे जो अनुकरणीय हो, इसके लिए नववर्ष में कुछ नए पौधे लगाकर प्रकर्ति को और भी सुंदर बनाने का संकल्प लिया जा सकता है।घर के हर सदस्य से कही न कही एक पौधा लगवाये और उसका पोषण भी हो।नववर्ष का जश्न घर मे खुशियां मनाकर किया जा सकता है।अपने परिजनों,मित्रो के साथ भी नववर्ष पार्टी सेलिब्रेट कर सकते है. इसके लिए आप किसी होटल में कास्सिनो या क्लब में जाकर भी मौज मस्ती कर सकते है।लेकिन यह मौज मस्ती सात्विक हो तो बेहतर है।

नववर्ष पर अपने परिवार के साथ समय बिता सकते है क्योंकि कई बार आप समय की व्यस्तता के कारण परिवार को समय नहीं दे पाते है। इस दिन आप अपने परिवार को खाने पर कही बाहर लेकर जा सकते है और उन्हें कुछ उपहार भी दे सकते है।

साथ ही पिकनिक या मूवी प्लान कर सकते है। नववर्ष पर अपने परिवार या मित्रो के साथ मिलकर पिकनिक या सिनेमा देखने की योजना बना सकते है। लेकिन सबसे आवश्यक यह है कि आप नववर्ष पर परमात्मा को याद करना और उन्हें नमस्कार करना न भूले।साथ ही नये वर्ष पर कुछ अच्छा करने का संकल्प लेकर अच्छा सोचना शुरू करे तो सहज ही संकल्प पूरा हो जाएगा। परमात्मा से प्रार्थना है कि हे, परमात्मा यह वर्ष हम सबके लिए,अपने देश और समाज के लिए कल्याणकारी हो तथा दुनिया से हिंसा समाप्त होकर शांति सदभाव का वातावरण बना रहे।साथ ही कोरोना,ओमिक्रान ,डेंगू जैसी बीमारियों से हम व हमारा देश ही नही पूरी दुनिया मुक्त हो।तभी नव वर्ष की खुशी बनी रह सकती है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

आज का राशिफल

मेष : दिन के प्रारंभ में आप मानसिक दुविधाओं में खोए रहेंगे। अन्य लोगों के साथ आप जिद्दी व्यवहार छोड़ देंगे और समाधानकारी व्यवहार अपनाएंगे।

वृष : आपका आज का दिन मध्यमफलदायी रहेगा, दिवस के प्रारंभ में आपको शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्फूर्ति और आनंद का अनुभव होगा। आपकी सर्जनात्मक तथा कलात्मक शक्तियों में वृद्धि हो सकती है।

मिथुन : आपका आज का दिन मिश्र फलदायी रहेगा, । आज आप चिंता से घिरे रहेंगे और शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में भी मतभेद रहेगा, परंतु मध्याह्न के बाद आप सभी कार्यों में अनुकूलता का अनुभव करेंगे।

कर्क : आपका दिन प्रात:काल में पारिवारिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में लाभदायी है। स्त्रीवर्ग से लाभ होने के भी योग हैं। किसी प्रिय से भेंट होगी। मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, परंतु मध्याह्न के बाद आपके मन में विविध प्रकार की चिंताएं उठेंगी, जो कि पारिवारिक वातावरण को बिगाड़ सकती हैं।

सिंह : आज का दिन आनंदपूर्वक बीतेगा, व्यवसाय और व्यापार करनेवालों के लिए आज का दिन लाभदायी है। व्यापार में वृद्धि होगी। परिवारजनों तथा मित्रों के साथ आनंदपूर्वक पलों को मनाएंगे।

कन्या : नए कार्य का प्रारंभ करने के लिए समय अनुकूल है। आज आपके भीतर कुछ अधिक धार्मिकता रहेगी। कार्यालय या व्यावसायिक स्थल पर कार्यभार अधिक रहेगा। विदेश जाने के इच्छुक लोगों के लिए अवसर उपस्थित होने की संभावना है। मध्याह्न के बाद नए कार्य का आयोजन कर सकेंगे। अपूर्ण कार्य पूर्णता की दिशा में आगे बढ़ेंगे। व्यवसाय में बढ़ोतरी की संभावनाएं हैं। गृहस्थ जीवन में मधुरता छाई रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा।

तुला : खान-पान में आज विशेष ध्यान रखने के लिए गणेशजी सूचन करते हैं। दिन के दौरान नए कार्य का प्रारंभ करने के लिए समय अनुकूल नहीं है। अधिक कार्य से शिथिलता और मानसिक व्यग्रता का अनुभव आप करेंगे। प्रवास लाभदायी नहीं है, परंतु मध्याह्न के बाद आपको कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

वृश्चिक : आप आज दांपत्यजीवन को विशेष रूप से मना सकेंगे और उसके सुख का भी अनुभव कर सकेंगे। परिवारजनों के साथ सामाजिक समारोह में शामिल होंगे। छोटे से प्रवास का भी योग है। मध्याह्न के बाद आपका स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। मानसिक रूप से कुछ व्यग्रता का भी अनुभव करेंगे। मध्याह्न के बाद नए कार्य का प्रारंभ न करिएगा।

धनु : आज का दिन शुभफलदायी होगा, । शरीर और मन से अस्वस्थ रहते हुए भी आप अपने अपूर्ण कार्यों को पूर्ण कर सकेंगे। आर्थिक आयोजन भी बहुत अच्छी तरह से कर सकेंगे। कार्यालय में सहकर्मचारियों का सहयोग आपको मिलेगा। परिवारजन और मित्रों की घनिष्ठता में वृद्धि होगी। दांपत्यजीवन आनंददायी रहेगा।

मकर : वैचारिक स्तर पर विशालता और मधुरवाणी से आप अन्य जनों को प्रभावित कर सकेंगे, वाणी की मधुरता आपको नए संबंध बनाने में भी काम आएगी। आर्थिक आयोजन भी आज आप अच्छी तरह से कर सकेंगे। आज का पूरा दिन आनंद के साथ बीतेगा।

नौकरी में सहकार्यकरों का सहकार मिलेगा। मध्याह्न के बाद रोगी व्यक्ति के स्वास्थ्य में सुधार होगा और अधूरे कार्य पूर्ण होंगे।

कुंभ : आज आप अपने सभी कार्य को आत्मविश्वासपूर्वक ठीक तरह से संपन्न कर सकेंगे, । आर्थिक व्यवहार में भी आपको सफलता मिलेगी। पैतृक संपत्ति से लाभ होगा। फिर भी वाहन, मकान आदि के पत्रों से संबंधित कार्यवाही में सावधानीपूर्वक आगे बढ़िएगा। आपकी वैचारिक समृद्धि में वृद्धि होगी। मन में प्रफुल्लितता रहेगी। अधिक परिश्रम करने पर भी प्राप्ति कम होगी, फिर भी अपना कार्य सरलतापूर्वक कर सकने का संतोष पाएंगे।

मीन : आनंद और उत्साह में वृद्धि होगी। आर्थिक विषयों पर आप अधिक ध्यान दे सकेंगे। आप किसी भी कार्य को दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ कर पाएंगे।पितृपक्ष से लाभ होने की भी संभावना है। परंतु, जमीन से जुड़े विषयों के कार्य में सावधानी रखिएगा। संतानों के पीछे खर्च करेंगे। विद्यार्थीगण विद्याकीय क्षेत्र में अच्छी अभिव्यक्ति कर पाएंगे।